समाज को देने की सोच जरूरी

"महानगर के स्वनामधन्य करनानी परिवार के श्री महेश करनानी कहते हैं कि समाज में सेवा के कार्य काफी पहले से हो रहे हैं लेकिन मेरा मानना है कि शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में और काम करने की जरूरत है।"

परिवर्तन काफी हुआ है। सरकार की कोशिशें भी लगातार जारी हैं, लेकिन देश के वर्क कल्चर में अभी भी सुधार की काफी गुंजाइश है। काम करने के प्रति लोगों में जो जज्बा होना चाहिये, वह यहां अभी भी देखने को नहीं मिल रहा है। लोगों को अपनी मानसिकता बदलनी होगी। सब कुछ सरकार के उपर ही छोड़ देना उचित नहीं है। हर काम सरकारें नहीं कर सकती। खुद का कर्तव्य समझना होगा, खुद की जिम्मेदारी संभालनी होगी। जिन क्षेत्रों में ज्यादा ध्यान देने की जरूरत है, वहां सरकारों को ज्यादा ध्यान भी देना चाहिये। इन्फ्रास्ट्रक्चर सेक्टर में विकास की काफी संभावनाएं बनी हुई है। सरकारों को और सक्रिय होना होगा। साथ ही उद्योग और व्यापार क्षेत्र से जुड़े लोगों के बीच भरोसा कायम करना होगा। यह कथन है कोलकाता के सुपरिचित करनानी परिवार से संबद्ध रियल इस्टेट व्यवसायी श्री महेश करनानी का, जो 'विश्वमित्र' के साथ एक विशेष भेंटवार्ता में कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा कर रहे थे।

श्री करनानी कहते हैं कि कोलकाता के समाज का हमेशा से अपना एक विशिष्ट स्थान रहा है। यहां के लोग, यहां की संस्थाएं हमेशा से सेवा करने को तत्पर रही हैं। मेरा मानना है कि लोगों में ऐसी सोच आने की जरूरत है कि समाज से मैं कमा रहा हूं तो समाज के लिये कुछ करना भी चाहिये। अगर समाज से हम कुछ ले रहे हैं, तो देने में क्या हर्ज है। लेने-देने से ही तो परिवार और समाज चलते हैं। मेरा निजी मानना है कि अभी भी यहां इस तरह की सोच का अभाव है। इसके साथ ही मैं एक बात और कहना चाहूंगा कि मंदिर-धर्मशाला तथा प्याऊ आदि का निर्माण करवाना निश्चित रूप से अच्छा काम है। धार्मिक कार्य है। हम सभी धर्म को मानकर चलने वाले लोग हैं लेकिन सिर्फ मंदिर का निर्माण करवाने मात्र से ही यह मान बैठना कि मैंने सेवा का कार्य कर दिया, ऐसा नहीं है। 'भूखे भजन न होय गोपाला'। जिस समाज में आज भी रोटी, कपड़ा और मकाप की जद्दोजहद चल रही हो, वहां मंदिर में दर्शन करने या सिर्फ राम नाम जपने से जरूरी जरूरतों की पूर्ति नहीं होती है। इसलिए लोगों की बेहतरी के लिए, बेसहारा लोगों को सहारा देने के लिये और गिरते हुये को ऊपर उठाने के लिये कुछ और करना होगा। अगर लोगों का जीवन स्तर उठाना है तो सबसे पहले शिक्षा के क्षेत्र पर ध्यान देना होगा। शिक्षा के बाद दूसरा सबसे महत्वपूर्ण काम और महत्वपूर्ण जरूरत स्वास्थ्य क्षेत्र है। आजकल इलाज काफी महंगे हो गये हैं। इसलिए आमलोगों को स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराने के लिये समाज को आगे आना होगा। श्री करनानी कहते हैं कि मेरी व्यक्तिगत इच्छा गरीबों के लिए पक्के घर की व्यवस्था कराने के साथ ही साथ शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में काम करने की है। शादी-ब्याह के मौके पर दिखावा करने से क्या मिलता है? जितनी जरूरत है, उतना तो करना चाहिये, लेकिन जरूरत से ज्यादा दिखाने के लिये करोड़ों रुपये खर्च करना कितनी बुद्धिमानी है? ऐसे फिजूल के खर्चों में कटौती कर गरीबों का पेट भरा जा सकता है। गरीब कन्याओं के हाथ पीले किये जा सकते हैं।

श्री करनानी के ज्येष्ठ पुत्र श्री निखिल करनानी भवन निर्माण व्यवसाय के बारे में चर्चा करते हुये कहते हैं कि निश्चित रूप से पिछला कुछ समय रियल इस्टेट व्यवसाय के लिये अच्छा नहीं रहा है। तमाम कारणों से इस उद्योग में मंदी-जैसी स्थिति देखी जा रही थी। लेकिन धीरे-धीरे स्थिति अब सुधार की ओर चल पड़ी है। निखिल जी कहते हैं कि संगठित रूप से जो काम कर रहे हैं, क्वालिटी पर जो लोग ध्यान दे रहे हैं, समय से फ्लैट की डिलीवरी कर रहे हैं और ग्राहकों की पसंद को जो बारीकी से समझ रहे हैं, ऐसे लोगों के लिये रियल इस्टेट व्यवसाय में आज भी दिक्कत नहीं है। यह बात अलग है कि जीएसटी का भी प्रभाव भी इस उद्योग पर रहा है। इसके साथ ही वेस्ट बंगाल हाउसिंग इंडस्ट्रीयल रेगुलेशन एक्ट (डब्लूबी हीरा) का भी प्रभाव देखा गया है। आप कहते हैं कि अच्छा काम करने वालों के लिये रियल इस्टेट व्यवसाय में सुधार का दौर चल पड़ा है। जो लोग संगठित रूप से सोच-समझकर काम नहीं करेंगे ऐसे लोगों के लिये आने वाले समय में निश्चित रूप से दिक्कतें पैदा होंगी। आप कहते हैं कि आप कहां बिल्डिंग बना रहे हैं, किस तरह की बिल्डिंग बना रहे हैं, कितने बेडरूम वाले फ्लैट बना रहे हैं और किन लोगों को टार्गेट कर बना रहे हैं, यह सारी बातें व्यवसाय के भविष्य पर काफी हद तक निर्भर करती है। श्री करनानी के कनिष्ठ पुत्र श्री इशान करनानी कहते हैं कि पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता महानगर में भी बदलाव तो हो रहा है, लेकिन बदलाव की गति काफी धीमी है। दरअसल इशान करनानी के अनुसार कोलकाता महानगर एक आसान शहर है। बड़े आराम से लोग जीते हैं। ज्यादा भाग-दौड़, उठा-पटक वाली स्थिति नहीं है। यहां के लोग अति महत्वाकांक्षी भी नहीं हैं। किसी भी काम को आराम से करते हैं और किसी भी बात को आराम से सोचते हैं।

10 मई 1957 को कोलकाता में जन्मे श्री महेश करनानी स्व. शिवकुमार करनानी के सुपुत्र हैं। आपने सेंट जेवियर्स स्कूल से शिक्षा लेने के पश्चात सेंट जेवियर्स कॉलेज से बी. कॉम आनर्स की शिक्षा हासिल की। इसके बाद अपने व्यवसाय से जुड़ गये। श्री करनानी कोलकाता के सुपरिचित करनानी परिवार से ताल्लुक रखते हैं। आपके परदादा स्व. रॉयबहादुर सेठ सुखलाल करनानी थे, जिनके नाम से एसएसकेएम हास्पिटल है। पहले इस हास्पिटल का नाम प्रेसिडेंसी जनरल हास्पिटल था। 1946 में नाम बदलकर एसएसकेएम हास्पिटल हो गया। हरियाणा के सिरसा के मूल निवासी श्री करनानी के परदादा सेठ सुखलाल करनानी सबसे पहले कोलकाता आये थे और यहां व्यवसाय शुरू किया। बाद में करनानी बैंक नाम से आपके परिवार का बैंक भी शुरू हुआ। महानगर कोलकाता में आपके परिवार के कई सिनेमा घर थे। फिल्म के क्षेत्र में भी मजबूत उपस्थिति थी। इंद्रपुरी फिल्म स्टूडियो आप लोगों का ही था। कोयला की खानें थी। वर्तमान रियल इस्टेट व्यवसाय ईशा ग्रुप के नाम से चल रहा है। करनानी इस्टेट भी आपलोगों की है। आपके दो पुत्र निखिल एवं ईशान करनानी हैं। आपकी पत्नी श्रीमती संगीता करनानी हैं। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री निखिल करनानी का जन्म 29 जून 1984 को कोलकाता में हुआ। लॉ मार्टिनियर फॉर ब्वायज से कक्षा 12 तक की पढ़ाई करने के पश्चात ब्रिटेन से आपने अर्थ शास्त्र में स्नातक की डिग्री हासिल की। इसके साथ ही ब्रिटेन में ही रियल इस्टेट एंड फाइनेंस में मास्टर डिग्री की। क्रिकेट तथा स्नूकर खेलने का आपके शौक है। कनिष्ठ पुत्र श्री ईशान करनानी का भी जन्म 4 जनवरी 1990 को कोलकाता में हुआ। आपकी भी कक्षा 12 की शिक्षा लॉ मार्टिनियर फॉर ब्वायज में हुई। इसके बाद बी. कॉम आनर्स की पढ़ाई करने सिंगापुर चले गये और वहीं पूरी की। संगीत और खेल में आप भी शौक रखते हैं।

"श्री करनानी कहते हैं कि फूलों की सजावट के खर्च में थोड़ी कटौती कर अगर उसी पैसे से किसी को मरने से बचा लिया जाय, उसका इलाज करवा दिया जाय तो क्या यह बेहतर नहीं होगा?"